Бхагавад-Гита

Глава 14

भगवद्गीता। चतुर्दशोऽध्यायः

गुणत्रयविभागयोगः

vibh \bar{a} ga m - деление, разделение, отличие;

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्।

यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः॥ १॥

itas adv. - здесь, тут, сюда; сейчас, отныне, впредь; потому, поэтому;

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः।

सर्गे ऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥ २ ॥

ирā√śri (upa-ā√śri) I U. - прислоняться, покоиться, отдаваться, посвящать себя ч.-л.; sādharmya n - однородность, обладание одинаковыми признаками (+Gen.);

sarga m - движение, сущность; творение, создание; глава, раздел.;

pralaya m — исчезновение, смерть;

 $\sqrt{
m v}$ yath I $ar{
m A}$. - волноваться, трепетать, страшиться, быть удрученным, покидать;

मम योनिर्महदु ब्रह्म तस्मिन्गर्भं द्धाम्यहम्।

संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥ ३॥

saṃbhava m — происхождение, причина, основание;

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः संभवन्ति याः।

तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥ ४ ॥

 $m\overline{u}$ rti f - изображение; тело, вид;

 $b\bar{i}$ ја n - семя, зерно;

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः।

निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्॥ ५ ॥

sattva n – существование, суть, доброта, религиозная чистота, сознание;

rajas n - ctpactb, эмоция, мрак, туман, пыль;

tamas n - тьма, мрак;

prakṛti *f* – природа;

ni√bandh IX Р.– связывать, сковывать, обусловливать;

bāhu m – рука;

deha m, n — тело;

dehin, dehabhṛt m- человек, живое существо, воплощенный, имеющ. тело;

avyayam adv. – постоянно, вечно;

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात् प्रकाशकमनामयम्।

सुखसंगेन बध्नाति ज्ञानसंगेन चानघ॥ ६॥

nirmalatva *n* – чистота;

prakāśaka – светлый;

апатауа – здоровый, не пагубный;

saṃga m – связь с ч.-л., общение;

anagha – безвинный, безупречный;

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासंगसमुद्भवम्। तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसंगेन देहिनम्॥ ७ ॥

 $r\bar{a}$ ga m — страсть, склонность к ч.-л.;

ātmaka – имеющий природу, принадлежащий, состоящий;

 tr қ n āf — жажда, алчность, желание;

samudbhava *m* происхождение; – происходящий из;

mohana – вводящий в заблуждение, обманывающий, ослепляющий;

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्।

प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबन्नाति भारत॥ ८॥

pramāda m — безумие, опьянение;

 \bar{a} lasya n – лень, вялость;

nidraf – сон, сонливость;

सत्त्वं सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि भारत।

ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे सञ्जयत्युत ॥ ९ ॥

 $\sqrt{\text{sañj I P.}}$ – прилипать, приставать, быть привязанным; *caus*. привязывать; $\overline{\text{a}}\sqrt{\text{var V P.}}$ – скрывать, окутывать;

uta частица – также, и (ity-uta –вот так);

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।

रजः सत्त्वं तमश्चेव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥ १० ॥

abhi√bhū I Р. – преодолевать, превосходить;

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन् प्रकाश उपजायते।

ज्ञानं यदा तदा विद्यादु विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥ ११ ॥

prakāśa - светлый; m свет,

vivardh I \bar{A} . – вырастать, крепнуть;

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामश्चमः स्पृहा।

रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भारतर्षभ ॥ १२ ॥

pravṛtti f – деятельность, развитие;

 \bar{a} rambha m — начало, схватывание;

а́sama m - беспокойство;

 $\operatorname{sprh} \bar{\operatorname{a}} f$ – желание, вожделение, рвение;

अप्रकाशो ऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च।

तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥ १३ ॥

nandana m – сын, отпрыск, потомок;

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्।

तदोत्तमविदां लोकानमलान् प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥

pra√vardh I Ā. – вырастать, развиваться;

uttamavid (uttama-vid) *m* – величайший мудрец;

prati√pad IV Ā. – достигать, получать, узнавать, понимать;

रजिस प्रलयं गत्वा कर्मसंगिषु जायते। तथा प्रलीनस्तमिस मृढयोनिषु जायते॥ १५॥

saṃgin – привязанный к ч.-л., преданный ч.-л.;

pralīna (p.p. *om* pra√lī) – умерший;

yoni m – лоно, чрево, происхождение род, (-yoni происходящий из);

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलं।

रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥ १६ ॥

sāttvika – относящийся к sattva;

सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च।

प्रमादमोहो तमसो भवतो ऽज्ञानमेव च॥ १७॥

moha m – обман, заблуждение;

ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।

जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः॥ १८ ॥

ūrdhvam adv.- вверх;

rājasa – относящийся к гуне rajas;

jaghanya – низкий, последний;

vṛttistha (vṛtti-stha) — имеющий склонность (от vṛtti f — характер, поведение, склонность); adhas adv. — внизу;

 $t\bar{a}masa$ — темный, относящийся к гуне tamas.

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।

गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सो ऽभिगच्छति ॥ १९॥

गुणानेतानतीत्य त्रीन् देही देहसमुद्भवान्।

जन्ममृत्युजरादुःखेर्विमुक्तो ऽमृतमश्रुते ॥ २० ॥

аtī (ati√i) II Р. - проходить, преодолевать;

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गेस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो।

किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ॥ २१ ॥

liṅga n - отметка, знак отличия, символ; фаллос;

 $\bar{\mathbf{a}} \mathbf{c} \bar{\mathbf{a}} \mathbf{r} \mathbf{a} \ n$ - поведение, образ жизни, правило; хорошее поведение, благочестие,

ati $\sqrt{\text{vart I A}}$. - проходить, протекать (о времени); преодолевать; отвращать, устранять;

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव।

न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्कृति ॥ २२।

saṃ-pra $\sqrt{\text{vart}}$ (sam-pra $\sqrt{\text{vart}}$) I $\bar{\text{A}}$.- выходить; возникать, начинать; ni $\sqrt{\text{vart}}$ I $\bar{\text{A}}$.- возвращаться, идти обратно, уходить, переставать;

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते।

गुणा वर्तन्त इत्येव यो ऽवतिष्ठति नेङ्गते ॥ २३ ॥

udāsīnavat - непричастный, безразличный, равнодушный, стоящий в стороне; ava $\sqrt{\sinh a}$ I U. - оставаться, находиться, быть; $\sqrt{\sin a}$ I U. - идти, двигаться;

समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाश्चनः।

तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः॥ २४॥

loṣṭa m, n - глыба, ком (земли); nindā f - хула, порицание, брань, оскорбление; saṃstuti f - восхваление, слава;

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।

सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥ २५॥

 $m\bar{a}$ na m - честь, уважение; самомнение; арата na m, n - неуважение, унижение, оскорбление;

मां च यो ऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।

स गुणान्समतीत्येतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ २६ ॥

avyabhicāra - верный, постоянный; m верность; bhūya - n бытие, становление;

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च।

शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च॥ २७॥

ргатізіһ \bar{h} - основа, основание; пристанище, поддержка; śāśvant - постоянный, непрерывный, вечный; ekāntika — исключительный.